

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(Since 1969)

[www.jainjagruti.in](http://www.jainjagruti.in)

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राइडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

फळ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९९

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५० वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०१९ ❖ वीर संवत २५४५ ❖ विक्रम संवत २०७५

या अंकात	पान नं.	पान नं.	
● वाचकांचे मनोगत.....	२३	● अधिक नहीं तो एक गुण ही अपना ले	९९
● भगवान महावीर का अपरिग्रह दर्शन	२७	● भगवान महावीर की वाणी से निसर्ग का विज्ञान	१००
● कव्हर तपशील	३१	● विराट वागरणा	१०३
● आनंद तीर्थ चिचोंडी – वर्षीतप पारणे	३३	● भय दिखाकर धर्म करना संभव नहीं	१०७
● ॥ जिनेश्वरी ॥		● पद्मभूषण पं. सुखलालजी	१११
अध्याय ३५ : अणगार मार्ग गति		● गुढी – स्व अस्तित्वाची	११६
अध्याय ३६ : जीव – अजीव विभक्ती	४३	● ऐसी हुई जब गुरु कृपा – ओलखाण कर	११९
● भगवान महावीर के प्रेरक प्रसंग	५५	● विवेक संसार का सबसे बड़ा गुरु	१२१
● जैन समाज गौरव – सर्व समावेषक		● आज फिर जीने की तमन्ना है – २	१२३
व्यक्तिमत्त्व श्री. शांतीलालजी कटारिया	६७	● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ – आखिरी मुकाम	१२९
● सुख का साधन एकान्तवास	७५	● सच्चं जिणसासण	१३१
● उपदेशों को जीवन में ग्रहण करना ही सार्थक	७७	● आत्मा के विकास का रिपू क्रोध	१३२
● विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान जैन		● जैन समाजातील विवाह समस्या,	
भारताचा खरा हिरो	७९	चिंतन, उपाय	१३३
● एक छोटी सी बात	८१	● इंद्रध्वज विधान में विश्वशांती की	
● जैन मंदिरों की नगरी : श्री शत्रुंजय तीर्थ	९१	कामना निहित	१३७
● शांति की राह दिखाते हैं		● जितो तेरावा वर्धापन दिन, पुणे	१३९
भगवान महावीर के सिधांत	९६	● जैन कॉन्फ्रन्स – शपथविधी, पुणे	१४०

❖ जैन जागृति ❖ एप्रिल २०१९ ❖ १९ ❖

● महाखादी श्री. विशाल चोरडिया – गौरव	१४३	● क्रियोट्रार – एक नजर में	१६०
● भनसाळी उद्योग समूह – कोपरगांव	१४५	● जीवित महोत्सव – वर्तमान संदर्भ में	१६३
● सूर्यदत्ता इन्स्टट्युट, पुणे	१४७	● जैन समाज स्कूल में दाखिला	
● सौ. सोनल बोरुंदिया – पुरस्कार	१४८	करते वक्त ध्यान दें	१६४
● आनंद दरबार कात्रज, पुणे	१४८	● हास्य जागृति	१६५
● सौ. सीमा धाडीवाल, पुणे – व्याख्यान	१४९	● आनंद की अनुभूति का राजमार्ग	१६६
● महावीर इन्स्टर्नेशनल, अहमदनगर	१५०	● डायमंड डायरी	१६७
● स्वानंद महिला संस्था, पुणे	१५१	● मानवता के मंदराचल भगवान महावीर	१७१
● डॉ. अशोक पगारिया, पुणे – पुरस्कार	१५२	● विहार सेवेत सहभागी व्हा	१७३
● सी.सी. डांगी, मुंबई – उद्घाटन	१५२	● चढ़ाओढ़ : एक गंभीर विचार	१७५
● JATF - Golden Opportunites	१५३	● शब्द	१७६
● कोठारी चॉरिटेबल ट्रस्ट, वडगाव शेरी	१५३	● आत्मशक्ति का विकास	१७७
● मनोरंजन और संचाद के आधुनिक संसाधनों के दुरुपयोग से बचे	१५५	● महावीर जन्म कल्याणक	१७९
● नंबर १ चा मित्र ! नंबर १ चा शत्रु	१५८	● क्यों होते हैं मनोरोग ?	१८७
● रत्न संदेश	१५९	● कर्मण्ये वा धिकारस्ते	१९३
		● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या	

**जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित**

**पंचवार्षिक रु. २२००**

**त्रिवार्षिक रु. १३५०**

**वार्षिक रु. ५०० रु.**

**या अंकाची किंमत ५० रुपये।**

● [www.jainjagruti.in](http://www.jainjagruti.in)  
 ● [www.facebook.com/jainjagrutimagazine](http://www.facebook.com/jainjagrutimagazine)

**जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिओर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.**

**BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI**

**Bank : STATE BANK OF INDIA**

**Branch : Market Yard, Pune 37.**

**Current A/c No. : 10521020146**

**IFSC Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिद्ध केले। संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिद्ध झालेल्या मताशी संपादक सहभत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

## जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ मो. संजय: ९८२२०८६९९७ सुनंदा: ९४२३५६२९९१, [www.jainjagruti.in](http://www.jainjagruti.in)

Email : [jainjagruti1969@gmail.com](mailto:jainjagruti1969@gmail.com) • Press Email : [prakash.offset@rediffmail.com](mailto:prakash.offset@rediffmail.com)

### ◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निंगडी – श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९९९४०९, ९४२२८३२८४९
- ❖ पुणे शहर ❖ जळगाव – श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ पुणे शहर ❖ कुरुवाडी – श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ गुरुवार पेठ, पुणे – श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे – श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०९५ / ९३७३६८२९३७
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे – निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ परिसर, पुणे – सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे – सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे – श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे – श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेस्गाव – श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे – श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे – श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- ❖ दौँड, श्रीगोंदा – श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- ❖ अहमदनगर – श्री. महेश एम. मुनोत – मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका – श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ बीड – श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
- ❖ सोनई – श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ औरंगाबाद – श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर – श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ नाशिक – श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन: ०२५३-२३११००८, मो. ९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक – मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर – श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ बारामती – डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.: ९३२५००४९५०
- ❖ अमळनेर, जि. जळगाव – श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ धुळे – श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार – श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर – श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली – श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर – सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन. ०२३१-२६९५४३३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा – श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

## ॥ वाचकांचे मनोगत ॥

जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण...



जैन जागृति – गोल्डन ज्युबिली वर्षातील पहिला अंक, सप्टेंबर २०१८ पर्युषण अंका पासून वाचकांचे मनोगत ‘जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण’ या सदरात दरमहा आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराज, समाज बांधव यांचे आलेली पत्रे जैन जागृतित प्रकाशित केली जात आहेत. या सदरात प्रकाशित करण्यासाठी बरीच पत्रे, संदेश आमच्याकडे आली आहेत. यापैकी दरमहा काही पत्रे प्रकाशित केली जातील. सर्व पत्रे क्रमशः प्रसिद्ध केले जातील. – संपादक

**प्रबुद्ध विचारक पू.श्री आदर्शकृष्णजी म.सा**  
**जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद**

॥ अर्हम् ॥



श्रद्धाशील,

श्री. संजयजी

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था, ‘साहित्य वह है, जिसे हल खींचता हुआ किसान भी समझ सके और खूब पढ़ा लिखा इंसान भी।’

‘जैन जागृति’ मासिक पत्रिका को मैं इस रूप में देखता हूँ। जैन पत्रिकाओं की परंपरा में यह सबसे पहली पत्रिका है। इसने शुरुआत से जन जागरण का

अच्छा कार्य किया। प्रसिद्ध विचारक एवं लेखकों के विचारों से सामान्य जनमानस का परिचय कराया।

मुझे स्मरण होता है, आपके पिताजी श्री. कांतिलालजी का जिन्होंने इस क्षेत्र में कदम रखकर आपको यह विरासत दी है। आप भी इस विरासत को आगे बढ़ाने का भरसक प्रयास कर रहे हो।

वर्तमान में तो जैन जागृति समाज की बहुप्रिय पत्रिका है। इसमें आगम-वाणी, संत-वाणी, सुविष्यात वक्ता, विचारकों के साथ युवा-महिला आदि सबके विचारों को स्थान दिया है। जैन समाज के बच्चे, युवा, कन्याएँ आदि जिन-जिन क्षेत्रों में श्रेष्ठता हासिल करते हैं, उनका अभिनंदन करके आप उनके लिए प्रोत्साहन का कार्य करते हैं। इससे उनका, परिवार का तथा समाज एवं धर्म का गौरव बढ़ता है।

हल्के-फुल्के चुटकुलों से लेकर कविताएँ, गीत, कहानियाँ, प्रवचन, धारावाहिक, उपन्यास, पहेलियाँ, समाज की समस्याएँ एवं उपलब्धियाँ ऐसे विविधताओं से सुसज्जित ‘जैन जागृति’ का स्वागत समाज के हर स्तर पर होता हुआ दिखाई देता है। इसकी माँग निरंतर बढ़ती जा रही है।

यह वर्ष पत्रिका का स्वर्णिम वर्ष है। इतने लंबे समय तक आपने पाठकों को अच्छा पाठ्य प्रदान किया है, तभी पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है। आपके इस सफलता पर आप का अभिनंदन करते हुए आगामी क्षणों के लिए मंगल कामना करते हैं।

– आदर्शकृष्ण

**प्रवर्तक डॉ राजेन्द्र मुनिजी म.सा.**

**का जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद**



श्री. संजयजी चोरडिया,  
सादर स्मरण,

यह जान कर महती प्रसन्नता है कि विगत लम्बे समय से जैन जागृति पत्रिका द्वारा समाज संगठन व सेवा का अद्भुत कार्य किया जा

रहा है। आप श्री के पूज्य पिताश्री कांतिलालजी चोरडिया की गुरु पुष्कर देवेन्द्र के साथ श्रद्धा भक्ति व गहरी आत्मीयता रही है उनकी सेवा भावना सदा स्मरण में बनी रहती है। योग्य पिता के सुयोग्य पुत्र होने के नाते आपने इस जनजागरण के आनंदोलन को और अधिक व्यापक बनाया है इस सुवर्ण महोत्सव पर हमारी ओर से तथा पूज्य उपाध्याय रमेश मुनिजी, साहित्य दिवाकर सुरेन्द्र मुनिजी द्वारा हार्दिक मंगल कामना स्वीकार करें। भविष्य में इसी प्रकार आप जैन जागृति के माध्यम से समाज सेवा करते रहें यही मंगल मनिषा।

भवदीय - प्रवर्तक राजेन्द्र मुनि, दिल्ली

### आनंदायी व कौतुकास्पद बाब

सुरुवातीच्या काळात कै. कांतिलालजी चोरडिया यांनी छोटे खाणी मासिक छपाई सुरु केली. बघता बघता आज त्यास ५० वर्षे पुर्ण होत आहेत. आनंदायी व कौतुकास्पद बाब आहे. जैन समाजातील धार्मिक माहिती आपल्या मासिकातुन प्रसिद्ध होत असते. समाजाला आपल्या मासिकाचा निश्चितपणे सार्थ अभिमान आहे. सुरुवातीच्या काळात वाचकांची संख्या अल्प होती. श्री. चोरडियाजी घरेघरी जाऊन मासिक विक्री करीत असत, त्याकाळी जाहिरातीचे कोणतेही माध्यम उपलब्ध नव्हते अशा वेळी विक्री कमी व छपाईचा खर्च जास्त होता असे असताना देखील त्यांनी प्रयत्न सोडले नाहीत व त्याचे फळ म्हणून आज आपण सुवर्ण महोत्सव साजरा करीत आहात. आपल्या मासिकाचे काम वटवृक्षा सारखे विस्तारलेले आहे. आज संजयजी चोरडिया मासिकाचे काम अतिशय सुरेखपणे सांभाळीत आहेत. बदलत्या काळानुसार मासिकामध्ये बदल झालेले आहेत. अत्याधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यात येत आहे. आपल्या मासिकास वाचकांची पसंती मिळत आहे. लोक आपल्या मासिकाची आतुरतेने वाट पहात असतात.

आपण साजरा करीत असलेल्या जैन जागृति लोकप्रिय मासिकाच्या सुवर्ण महोत्सवास

आमच्याकडुन मनःपुर्वक हार्दिक शुभेच्छा ! आपल्या मासिकाची उत्तरोत्तर अशीच प्रगती होवो हीच ईश्वर चरणी प्रार्थना !



आपला  
प्रेषक : वालचंद  
देवीचंद संचेती, पुणे  
मो. ९३२५२५५२५

### ‘जैन जागृति’ मासिकासंबंधीच्या आठवणींचे काही रम्य क्षण

‘जैन जागृति’ पत्रिकेचा आणि माझा ऋणानुबंध जवळजवळ २७ वर्षांचा आहे. मासिकाच्या २५ व्या वर्षपूर्तीच्या प्रसंगी एक सहस्रमन्वयक म्हणून काम करीत असताना माझा जागृति परिवाराशी घनिष्ठ परिचय झाला.

मला अजूनही आठवतात ती वर्षे (१९८८-१९९२) जेव्हा मी ऋतुराज सोसायटीत सौ. पुष्पा शिंगवी यांच्या निवासस्थानी सन्मति तीर्थ संस्थेचे प्राकृत भाषेचे कलास घेण्यासाठी सलग पाच वर्षे दर शनिवारी येत असे. त्या दरम्यान किमान ३-४ वेळा तरी आपले पिताजी स्व. कांतिलाल चोरडिया यांना भेटण्याचा योग आला. मी जैन जागृतीची सदस्य झाले. प्रथम वाचू लागले. नंतर लिहू लागले. मग हा सिलसिला सलग २० वर्षे चालू राहिला.

मी भांडारकर संस्थेत काम करीत असताना प्राच्याविद्यातज्ज्ञ भांडारकरांसंबंधी लिहिलेला सविस्तर लेख आवर्जून छापलात. प्राकृत कोशाच्या आंतरराष्ट्रीय प्रॉजेक्टला अंकात स्थान दिलेत. पुणे विद्यापीठात जैन अध्यासन प्रमुख म्हणून काम करीत असताना घेतलेल्या विविध स्पर्धा व त्यांचे रिझल्ट; तसेच त्यातील निवडक निबंधांना प्रसिध्दी दिलीत.

सन्मति-तीर्थाच्या स्थापनेला जवळजवळ ३०

वर्षे झाली. प्राकृत भाषा आणि जैन तत्त्वज्ञान यांची शिक्षिका म्हणून मी तेथे आरंभापासून आजतागायत कार्यरत आहे. माझ्या कित्येक विद्यार्थिनी उत्कृष्ट शिक्षिका व लेखिका अशा दोन्ही भूमिका बजावत आहेत. सन्मति-तीर्थचे आपण सतत सदिच्छक आहात. माझ्या व माझ्या विद्यार्थी-विद्यार्थिनींच्या अगणित लेखांना व उपक्रमांना आपण भरीव साथ दिलीत. सन्मतिचे कार्य जैन जागृतिच्या वाचकांपर्यंत पोहोचविष्ण्याचे महत्त्वाचे कार्य केलेत व तेही कोणत्याही प्रकारे परतफेडीची किंचित् सुधा अपेक्षा न ठेवता !

गेल्या वर्षभरात माझ्या इतर लेखनाचा ओघ मी बुधिपुरःसर कमी केला आहे. प्राकृत-इंग्रजी महाशब्दकोषाच्या मुख्य संपादकत्वाची जबाबदारी स्वीकारल्यामुळे, माझ्या परिपक्व विद्यार्थिनींच्या सहाय्याने रोज प्रगती करण्याचा ध्यास घेतला आहे. तरीही प्रसंगोपात लिहिलेल्या लेखांना आपण भावी काळात प्रसिद्धी द्याल असा १०१ टक्के विश्वास आहे.

‘जैन जागृति’च्या सर्वसमावेशक स्वरूपाविषयी पुन्हा नवीन लिहिण्याची खरोखरच आवश्यकता वाट नाही. ५० व्या वर्धापन दिनाच्या या वर्षात आपल्या मासिकाचे रसग्रहण करणाऱ्या व शुभेच्छा देणाऱ्या वाचक-प्रतिक्रियांचा आपल्यावर अक्षरशः पाऊस पडत आहे. मुख्यपृष्ठापासून अंतिम पृष्ठापर्यंत अतिशय देखणा, रंगबेरंगी अंक प्रत्येक महिन्याला नियमित वेळी प्रकाशित करून पाठवणे काही येरागाबाळ्याचे काम नव्हे !

सहकार्याबद्दल धन्यवाद व मासिकाला खूप खूप शुभेच्छा !

प्रेषक : डॉ. नलिनी  
जोशी,  
डायरेक्टर सन्मति तीर्थ  
मुख्य संपादक - प्राकृत  
डिक्शनरी



## खन्या अर्थाने ‘जैन जागृति’

जैन जागृतिला पन्नास वर्षे पूर्ण होत आहेत. केवळ जैन समाजात वितरित होत असलेल्या मासिकाने पन्नास वर्षाचा टप्पा यशस्वीपणे गाठावा आणि आपला ठसा जैन बांधवांवर उमटवावा ही खरोखरच विशेष आणि कौतुकाची बाब आहे. नावाप्रमाणे जैन धर्मियांमध्ये जागृति निर्माण करण्याचं फार मोठं कार्य जैन जागृति मासिकाने केलं आहे यात संदेह नाही.

धर्म आणि आचरण याबाबत आपल्यात अनेक वेळा संभ्रम निर्माण होत असतो. त्यावेळी कुणातरी जाणत्याच्या मताची आणि मार्गदर्शनाची आवश्यकता असते. जैन जागृति मासिकाच्या माध्यमातून अशा प्रसंगात नेहमीच मार्गदर्शन मिळालेले आहे. अनेक विषयांना स्पर्श करणार, प्रभावी लेखन, साधु-साध्वींचे चातुर्मास, जैन धर्मियांमधील बदलत्या काळातील विवाह... अशा अनेक संवेदनशील आणि महत्त्वाच्या विषयांवर जैन जागृति मासिकाने लेखन सादर केले आहे.

अतिशय देखणेपणे डिझाईन केलेले हे मासिक त्यावर सुयोग्य अशा संपादकीय संस्कारासह वाचकांच्या भेटीला येत असते. अनेक कुटुंबात तर जैन जागृति मासिकाची प्रतिक्षा असते. स्वर्गीय श्री. कांतीलालजी चोरडिया यांनी दूरदृष्टी ठेवून सुरु केलेल्या जैन जागृति मासिकाची धुरा श्री. संजय चोरडिया आणि सौ. सुनंदा चोरडिया हे अतिशय उत्तम रितीने वहात आहेत.

जैन जागृति मासिकाला सुवर्ण महोत्सवानिमित्त हार्दिक शुभेच्छा !



प्रेषक : किशोर  
पिरगळ, पुणे  
मो. : ९४२२०२९७९९

## कळ्ठर तपशील - एप्रिल २०१९

### ❖ श्री शत्रुंजय तीर्थ

पालीताना, जिल्हा भावनगर, गुजरात येथे जैन मंदिराची नगरी श्री शत्रुंजय तीर्थ हे प्रसिद्ध आहे. जैन शास्त्रानुसार या तीर्थाला शाश्वत तीर्थ मानले जाते. या तीर्थाबद्दल या अंकात पान नं. ९१ वर लेख दिला आहे.

### ❖ विंग कमांडर अभिनंदन जैन

१७ एप्रिल २०१९ ला महावीर जयंतीच्या दिवशी अखिल भारतीय दिगंबर जैन महासमिती तर्फे श्री. अभिनंदन वर्धमान जैन यांना 'भगवान महावीर अहिंसा पुरस्कार'ने सन्मानित करण्यात येणार आहे. विंग कमांडर अभिनंदन - भारताचा खरा हिरो हा लेख या अंकात पान नं. ७९ वर दिला आहे.

### ❖ महाखादी, श्री. विशाल चोरडिया - पुरस्कार

नवी दिल्ली येथे केंद्रीय सूक्ष्म, लघू व मध्यम उद्योग मंत्रालयाच्या वतीने आयोजित कार्यक्रमात महाखादीसाठी मंडळाचे सभापती श्री. विशाल चोरडिया यांचा 'युवर स्टोरीज ब्रॅण्डस् ऑफ इंडिया अवॉर्ड्स्' देत सन्मान करण्यात आला. उद्योग मंत्रालयाचे राज्यमंत्री गिरीराज सिंग यांनी हा पुरस्कार प्रदान केला.

### ❖ जितो तेरावा वर्धापन दिन - पुणे

जितो पुणेच्या वतीने १६ मार्च २०१९ रोजी आयोजित तेराव्या वर्धापन दिनानिमित्त समाजातील विविध क्षेत्रात कार्य करणाऱ्या सहा व्यक्तींचा श्री. शांतीलालजी मुथ्था व कॉसमांस बँकेचे संचालक श्री. कृष्णकुमार गोयल यांचे हस्ते पुरस्कार देऊन सन्मान करण्यात आला. श्री. ओमप्रकाशजी रांका यांना जीवन गौरव पुरस्कार, श्री. अचल जैन यांना आदर्श सामाजिक कार्यकर्ते पुरस्कार,

श्री. सुभाषजी चुत्तर यांना आदर्श उद्योजक, सौ. विमल बाफना यांना शैक्षणिक क्षेत्रातील उल्लेखनीय कार्य, सौ. संगीता ललवाणी यांना यशस्वी उद्योजिका, श्री. संदीप गादिया यांना युवा उद्योजक या पुरस्काराने गौरविण्यात आले. यावेळी मंचावर जितो पुणेचे अध्यक्ष कांतीलालजी ओसवाल, सचिव अजयजी मेहता, देवीचंद्रजी जैन, विजयकांतजी कोठारी, शोभा धारीवाल, विजयजी भंडारी, राजेशजी वर्धन, राजेशजी सांकला, इंद्रजी छाजेड, रमेशजी गांधी, विनोदजी मांडोत यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

### ❖ जैन कॉन्फरन्स, शपथ विधी - पुणे

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्सच्या नूतन राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. विमल सुदर्शनजी बाफना आणि नूतन राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री. सागरजी कुंदनमलजी सांखला यांच्यासह १४ राज्यातून आलेले १४ प्रांतीय नूतन महिला अध्यक्षा व १४ नूतन युवा अध्यक्ष तसेच प्रांतीय महामंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष व कार्यकारिणी सदस्यांचा शपथ विधी समारंभ सोमवार दि. १८ मार्च २०१९ रोजी अण्णाभाऊ साठे सभागृह, पुणे येथे मोठ्या आनंद मंगलमय वातावरणामध्ये संपन्न झाला. जैन कॉन्फरन्सचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी यांनी या दोन्ही नूतन राष्ट्रीय अध्यक्षांना शपथ दिली.

### ❖ अरिहंत सोशल ग्रुप - पुणे

अरिहंत सोशल ग्रुपच्या वर्धापन दिनानिमित्त मावळ तालुक्यातील भाजे या गावी असणाऱ्या गरजू, दुर्लक्षित, अनाथ व आदिवासी मुलांचा संभाळ करणाऱ्या क्रिएशन संस्थेस मदत करण्यात आली.

ग्रुपचे अध्यक्ष श्री. अभयजी संचेती यांच्या हस्ते संस्थेला गहू, तांदूळ, ज्वारी, डाळी, कडधान्ये

व फळे भेट देण्यात आली. यावेळी सोबत प्रकाश दरडा, हरकचंदजी मुथा, कांतीलालजी श्रीश्रीमाळ, सतीश श्रीश्रीमाळ, सुनील गुंदेचा इ. मान्यवर उपस्थित होते.

- ❖ श्री. शांतीलालजी कटारिया – पुणे  
जैन समाज गौरव, आदित्य बिल्डर्सचे आधारस्तंभ, महाराष्ट्र क्रेडाईचे अध्यक्ष व सर्व समावेषक व्यक्तिमत्व श्री. शांतीलालजी कटारिया यांची मुलाखत या अंकात पान नं. ६७ वर दिली आहे.
- ❖ श्री. अशोक पगारिया – पुणे  
कासरवाडी, पुणे येथील सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक कार्यात अग्रेसर डॉ. अशोककुमारजी पगारिया यांना श्री जैन सेवा संघ मुंबई द्वारा “जैन सेवा रत्न पुरस्कार” देऊन सन्मानित करण्यात आले.
- ❖ सौ. गौरी भटेवरा – पुणे  
पुणे येथील सौ. गौरी मेहूलजी भटेवरा यांना रणरागिणी युवा सामाजिक पुरस्कार महाराष्ट्र राज्य पत्रकार संघातर्फे मिळाला. हा पुरस्कार खासदार सुप्रिया सुल्ले, आमदार निलमताई गोरे, संजयजी आवटे, संजयजी भोकरे, सुरेशजी कोते यांच्या हस्ते मिळाला. ●

### खुली किताब प्रतियोगिता

श्री अ.भा. साधुमार्गी शांत क्रांति जैन श्रावक संघ, उदयपूर द्वारा महास्थविर श्री शांतीमुनिजी म.सा. द्वारा रचित “महोदधि भाग १” पर आधारित खुली किताब प्रतियोगिता आयोजित की है। पुस्तक का विषय है – आचारांग सूत्र प्रश्नोत्तर के आईने में। पुस्तक का रियायती मूल्य रु. १५०/- रखा है। उत्तर पुस्तिका वापसी की अंतीम तिथी है ०३-०९-२०१९। प्रश्नपत्र पुस्तक के साथ निःशुल्क उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु संपर्क करे –  
विजय पटवा, पुणे. मो. ९८५०९२७३०७

### अक्षय - तृतीया

अक्षय तृतीया के शुभ दिन हस्तिनापूर नगर में श्रेयांसकुमार ने क्रष्णभद्रे प्रभु को ईक्षुरस वहोरा कर सुपात्रदान का शुभारंभ किया था। उसकी याद में धन की ममता का विसर्जन करते हुए दान-धर्म को अपनाए। क्षणिक संपत्ति को छोड़ आत्मा की शाश्वत संपत्ति प्राप्त करे।

### जलप्रतिज्ञा

मी प्रतिज्ञा करतो की,  
पाणी हे जीवन असून,  
त्याचा वापर गरजेपुरता व काटकसरीने करेन.  
मी पाण्याचा अपव्यय व गैरवापर करणार नाही.  
नैसर्गिक प्रवाह, जलाशय, कालवे व  
पाणी पुरवठ्याच्या पायाभूत सुविधांचे  
मी रक्षण करेन.  
पाण्या विषयीचे कायदे व  
नियमांचे काटेकोरपणे पालन करीन.  
पाण्याचे संवर्धन व जतन करण्याचा  
मी प्रयत्न करेन  
पाण्याची स्वच्छता व पावित्र्य जपणे,  
ही माझी सामाजिक बांधिलकी मानून,  
त्याचे सदैव पालन करीन.  
महाराष्ट्र शासन : जलसंपदा विभाग

तीर्थकर प्रभु महावीरांचे अंतिम वचन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्रावर आधारीत

## ॥ जिनेश्वरी ॥

प्रवचनकार : उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

भावानुवाद : साध्वी श्री ओजसदर्शनाजी म.सा., सौ. योगिता चंगेडे (क्रमशः)



तीर्थकर प्रभु महावीरांचे  
अंतिम वचन श्रीमद्  
उत्तराध्ययन शास्त्र (आगम)  
यावर उपाध्याय श्री  
प्रवीणऋषिजी म.सा. १९९२  
पासून चातुर्मासात दरवर्षी  
सामूहिक पारायण करतात.

भगवान महावीरांच्या मुखातून निघालेली ही  
उत्तराध्ययन सूत्राची गंगोत्री सामान्य जनांसाठी श्री  
प्रवीणऋषिजींच्या सहज सुंदर भाषेत, अक्षरधारेत  
प्रवाहित झाले. दरवर्षी फार मोठ्या संख्येने गुरुदेवांचे  
भक्तीपूर्ण पारायण, अमृत वचन ऐकण्यास फार मोठा  
समाज येत आहे.

साध्वी श्री ओजसदर्शनाजी म.सा. व सौ.  
योगिता चंगेडे यांनी या हिन्दी प्रवचनाचे मराठीत  
भावानुवाद केले. आनंद तीर्थ रिसर्च फॉडेशन, पुणे  
द्वारा या भावनूवादाचे “जिनेश्वरी” हा ग्रंथ जानेवारी  
२०१६ मध्ये प्रकाशित करण्यात आला.

जास्तीत जास्त जैन बांधवा पर्यंत “जिनेश्वरी”  
पोहचावी यासाठी जैन जागृतित जुलै २०१६ पासून  
दरमहा “जिनेश्वरी” ग्रंथातील अध्याय प्रकाशित केले  
जात आहे. एप्रिल २०१९ या अंकात ‘जिनेश्वरी’चा  
शेवटचा अध्याय ३६ प्रकाशित केला आहे. आमच्या  
हजारों ग्राहकांनी या प्रवचनाला पहिली पसंती दिली.  
या सर्व अध्यायातून ही महावीर वाणी जगण्याला  
उद्दीष्टपूर्ण गाभा देत अंतर्मुख करते. – संपादक

### अध्याय ३५ : अणगारमार्ग गति

ज्याला नसे घर आणि डर  
नाही व्यवसाय, नाही संसार  
ना संपत्ती, ना मोटर-कार  
तोची खरा अणगार

अणगार म्हणजेच ज्याला आगार नाही, ज्याने  
कुठल्याही प्रकारच्या सुविधांबरोबर संपर्क ठेवलेला  
नाही, ज्या मार्गात कुठलाही आडमार्ग नाही असा  
मार्ग. अणगार म्हणजेच साधु व साधु म्हणजेच ज्याचे  
जीवन सुविधावादी नाही असा. जो ‘साधन’  
स्वीकारतो पण ‘सुविधा’ नाकारतो. कारण ‘सुविधा’  
आली की ‘साधना’ गेली. एक रस्त्याने ‘सुविधा’ येते  
तर दुसऱ्या रस्त्याने ‘साधना’ निघून जाते. यासाठी  
सुविधेसाठी दार प्रथम बंद करावे म्हणजे साधनेसाठी  
मार्ग खुला राहतो.

सुविधावादी जीवन गृहस्थाला शोभते. साधूला  
नाही. साधूना कुठल्याही गोष्टीचा ‘साधन’ म्हणून  
उपयोग करता येऊ शकतो. सुविधाच्या रूपात  
‘स्वीकारता’ येत नाही.

उदा. माईक ‘साधन’ आहे, ‘सुविधा’ नाही परंतु  
पंखा ‘साधन’ नाही, ‘सुविधा’ आहे.

ज्यामुळे साध्य सिद्ध होते ते साधन व ज्यामुळे  
सुखप्राप्त होते पण साध्य प्राप्ती होत नाही ती सुविधा.  
जसे प्रवचनाचा आवाज जास्तीत जास्त लोकांपर्यंत  
पोहचावा यासाठी माईकचा वापर होतो, ती सुविधा  
नाही. पंखा सुखासीन बनवितो त्यामुळे ती सुविधा

आहे. ही एकच कसोटी साधुने जीवन जगताना वापरली तरी गफलत होण्याची संभावना समाप्त होते.

**इमे संगे वियाणिज्जा, जेही सज्जंति माणवा ॥**

संग म्हणजेच लेप, साधूच्या साधनेवर जे लेप लावण्याची शक्यता असते, ज्यामुळे त्याची साधना लोप पावते, अशा लेपांपासून त्याने स्वतःचा बचाव केला पाहिजे. ते लेप म्हणजे असत्य, चोरी, हिंसा, अब्रह्यसेवन, आसक्ती व लोभ या सर्वांचा साधु ने त्याग करावा.

**मणोहरं चित्तधरं, मल्धुवेण वासियं ।**

**सकवाडं पंडुरुल्लोयं, मणसावि ण पत्थए ॥**

जिथे मन प्रसन्न होईल, चित्त लागेल, जिथे सुगंध आहे, जिथे दरवाजाला कडी लावता येत असेल अशा घराची साधुने मनानेही कामना करु नये. कारण की अशा ठिकाणी राहिल्याने जो राग व काम उत्पन्न होतो त्याला थोपविणे खुप कठीण जाते.

भगवंतानी दिलेले हे सूत्र दूरगामी परिणामांचा विचार करून दिलेले आहे. तुमच्याच घरात पहा ना? आता घरोघरी प्रत्येकाची खोली वेगळी. प्रत्येकाचा टी.बी. वेगळा. करमणुकीसाठी, मजेसाठी सुधा कुटुंबीय एकत्र बसणे बंद झाले यासाठी जुनी बुजुर्ग मंडळी म्हणतातच. “आधी भिंती असायच्या मोठ्यांची लाज राखण्यासाठी व आता भिंती झाल्या निर्लज्ज होण्यासाठी.”

या खोल्यांची दार बंद असली की आत भक्तीसंगीत नसणारच, जिथं चांगल्या-वाईटाची दखल घेणार कुणी नसणार तिथं पाप-वृत्तीच वाढणार. हा दोष साधु जीवनात राहु नये याची भगवंत काळजी घेतात. पुढे भगवंत सांगत आहेत की साधुने स्वतःसाठी घर बनवू नये, दुसऱ्याकडूनही बनवून घेऊ नये. कारण या गृहकर्माच्या आरंभ-समारंभात बन्याच व्रकारच्या जीवांची हिंसा संभवते.

**विसप्ये सव्वओ – धारे, बहुपाणिविणासणे ।**

**नत्थि जोङ्समे सत्थे, तम्हा जोङ्ँ णं दीवए ॥**

अग्निला सर्वात मोठे, महाकाय शस्त्र सांगितले

आहे. कारण अग्निच्या आरंभ-समारंभात षटकाय जीवांची हिंसा होते. साधुने स्वतः भोजन बनवू नये व स्वतःसाठी बनवून घेऊ नये, जे मिळेल ते ग्रहण करावे.

**हिरण्णं जायरुवं च, मणसावि न पत्थए ।**

**समलेङ्गु-कंचणे भिक्खू, विरए कय-विक्रए ॥**

साधुने, भिक्षुने धन, धान्य, संपत्ती, सत्ता इत्यादींची मनानेही इच्छा करु नये. संग्रह करु नये. खरेदी-विक्रीही करु नये. कारण खरेदी करणारा ‘ग्राहक’ असतो व विक्री करणारा विक्रेता, दुकानदार असतो. साधुने ग्राहक व विक्रेताही बनु नये. परमात्म्याने दिलेल्या भिक्षा-मार्गाचाच त्याने अवलंब करावा.

समुयाणं उंछमेसिज्जा... साधुने सामुदानीक आहार करावा, अनेक घरातून थोडं-थोडं आणलेला आहार घ्यावा. कुठल्याही रसात आसक्त होऊ नये. केवळ साधनापूर्तीसाठी आहार करावा. कामनापूर्ती अथवा रस पूर्तीसाठी आहार करु नये. संयमीत आहार करावा.

**अच्छणं रथणं चेव वंदणं पुयणं तहा ।**

**झड्ही-सक्कार-सम्माणं, मणसा-विण पत्थए ॥**

अर्चना, वंदन, पूजा, सत्कार, सन्मान याची साधूने मनानेही अभिलाषा करु नये. कुठल्याही प्रकारच्या सौदेबाजीत अडकू नये. निर्गम, निरहंकारी, धर्मानुरागी बनत हे जीवन प्रभुला समर्पित करावे.

**निज्जूहिउण आहारं, कालधम्मे उवट्टीए ।**

**जहिऊणं माणुसं बोर्दी, पहू दूक्खा विमुच्चइ ॥**

जेव्हा काळ-धर्म उपस्थित होतो, जेव्हा जाण्याची वेळ अटळ दिसते. तेव्हा आहाराचा त्याग करून हे शरीर सोडण्याची तयारी करावी. आहाराचा आधार सोडला की शरीर निराधार होते. निराधाराला शरीर सोडणे सहज सुलभ होते, असे जीवन जगणारा श्रमण वीतराग बनुन परीनिर्वाणाला प्राप्त होतो.

बंधुनो, भिक्षू-साधूसाठी ही आचार-संहीता, निर्दोष जीवन पद्धती भगवंतानी सांगितलेली आहे. परंतु या अध्यायाचा उपयोग कोणत्याही साधू-

साध्वीची चूक काढण्यासाठी नाही करायचा. भगवंतानी दिलेला धर्म ऐकायचा, जर आपली नजर दुसऱ्यांच्या उणीवा शोधण्यात जात असेल तर धर्मस्थानात राहून, धर्मध्यान करता करता पापाचा बंध होईल. पुण्य करता करता पापाची आवृत्ती होईल. कोणच्याही श्रद्धेला तडा जाऊ देऊ नका. हा अध्याय वाचून मनात मंगलभाव, पवित्रभाव जागृत होऊ द्या की, जर मी कधी परमात्म्याचा श्रमण, अणगार बनेन तेव्हा असाच जगेन.

●

## अध्याय ३६ : जीव-अजीव विभक्ती

**धर्म व ईश्वराला माना अथवा नाही  
परमात्मा बनण्याची इतकीच अट की  
'पदार्थापासून विभक्त व्हा.'**

कशाप्रकारे जीव अजीवापासून वेगळा होतो. सर्वजन या छत्तीसावा, शिखराचा अध्याय गाऊ या. या अध्यायात भगवंत सांगतात अनंत काळापासून आपले जे संसार परिभ्रमण चालले आहे. कुठून यात्रा प्रारंभ झाली, कुठपर्यंत पोहचली याची चर्चा या अध्यायात केली ही आहे. ही चर्चा करताना आपण स्वतःची चर्चा बघणार आहोत. या अध्यायाचे पारायण करता-करता आपल्या गत जन्मांचे स्मरण करून तेथील आपले कर्मबंध, तेथील नाते संबंध जे आहेत ते सर्व विसर्जित करायचे आहे. पुद्गलाबरोबर आपला जो संबंध आहे, जीवसृष्टी बरोबर जे अनुबंध आहेत, ८४ लक्ष योनीतील संपूर्ण विवेचन भगवंत सांगत आहेत. भगवंत आपल्या दिव्य ज्ञानात आपल्या अनादिकाळाच्या संपूर्ण भवयात्रेचे वर्णन करून तेथील पाप उर्जा विसर्जित करण्याचा संदेश देत आहेत. ज्या-ज्या योनीत आपण होतो तेथील संस्कारांपासून मुक्त होण्याचा सुंदर उपक्रम-पराक्रम या अध्यायाच्या पारायणाने करू या. या अध्यायाचे खूप उपयोग-प्रयोग केले जातात त्याचे परिणामही अतिशय सुंदर-समाधानकारक येतात.

या अध्यायाचे नाव आहे जीव-अजीव विभक्ती. विभक्ती म्हणजे वेगळे होणे. विलग होणे. भक्ती म्हणजे जुळणे, सलग होणे. संसार म्हणजे काय ? जीव अजीवाची भक्ती करतो आणि अजीव जीवाची भक्ती करतो. या दोहोच्या भक्तीत संसार चालत असतो.

अजीव अर्थात जड पदार्थ. पदार्थबरोबर जीवाची भक्ती आहे. आपण कोणाची भक्ती करतो ? संसार कशाच्या आधारावर चालला आहे ? जोपर्यंत पदार्थबरोबर भक्ती आहे तोपर्यंत संसार आहे. ज्याक्षणी पदार्थबद्दल भक्ती समाप्त होऊन जाईल. विभक्ती येईल. पदार्थापासून विभक्ती झाली की मोक्ष प्राप्त झालाच समजायचे.

या पदार्थाची अनादिकाळापासून आपण भक्ती करीत आहोत. भगवंत सांगतात विश्वभरात दोन पदार्थ आहेत १) चैतन्यमय पदार्थ २) चेतनाशून्य पदार्थ. उर्जा दोघांमध्ये आहे. चेतनाशून्य पदार्थाचे उदाहरण देतो... छोटसं उदाहरण मेडिकल सायन्सचेच दही बनण्याची पौद्गलिक प्रक्रिया

दूधात विरजन टाकले की दही जमते. दूधाचं दह्यात रुपांतर होतं त्याला मेडिकल सायन्स सांगत आहे की खूप सारे बॅक्टेरिया त्यात निर्माण होतात. त्या बॅक्टेरियांमुळे दूधाचं दही बनत. परंतु जैन दर्शनाची या गोष्टीला मान्यता नाही. सायन्स त्याला बॅक्टेरिया का म्हणतात ? कारण ते बघतात की ज्या दूधात विरजन घातलं की त्यात विखंडनाची प्रक्रिया होते. हे घटन-विघटन निर्माणाची विक्रियाच्या आधारावर सायन्स बॅक्टेरिया निर्मीती मानत आहे.

जैन दर्शनाचं प्रतिपादन आहे की ही जी विघटनाची जी विक्रिया आहे ती पौद्गलिक आहे. त्याच्यासाठी जीवसत्तेची आवश्यकता नाही. जर त्यात जीवसत्तेची उत्पत्ती असती तर भगवंताने त्याचे प्राशन करण्यास आज्ञा दिली नसती. कारण अचित ग्रहण करण्यास आज्ञा आहे, सचित ग्रहणाला नाही. ती केवळ पौद्गलिक विक्रिया आहे. पुद्गलात इतक्या प्रकारची विक्रिया होते की अवधीज्ञानी सुध्दा ओळखू

शकत नाही की यात पुदगल आहे की जीव आहे ? खूप विचित्र गणित आहे. त्यातच आपल्याला विज्ञान काही सांगतं; जैन दर्शन काही सांगतं, तत्त्वज्ञान वेगळंच मत स्थापीत करीत असतं.

जैन दर्शनाची मान्यता आहे, तुम्ही आजपर्यंत ऐकलं आहे वनस्पतीतून वनस्पतीची उत्पत्ती होते; परंतु परमात्मा सांगतात की पृथ्वीकाय मधून सुध्दा वनस्पतीची उत्पत्ती होते. ह्या योनी आहेत आणि योनी जड ही असू शकते, चैतन्य पण असू शकते आणि मिश्रसुध्दा असते. योनी म्हणजे जीव नाही, योनी म्हणजे ज्यांत जीवाला उत्पन्न होण्यासाठी जागा मिळते त्याला योनी म्हणतात.

#### पाणी उकळण्यामागचे शास्त्र

खूप लोकांना जिज्ञासा आहे की आम्ही उकळलेलं पाणी पितो मग पाणी गरम करताना जीव मरतातच ना ? मग हिंसेचे पाप बाधत नाही का ? आता बघा, होतं काय ? ज्यावेळी पाणी गरम केलं जातं त्यावेळी जीवांना मारायचं प्रयोजन नसतं. जिथे जे जीव असतात ते स्वाभाविक त्यांचे आयुष्य पूर्ण करून जातात. पाणी गरम का करतात ? पाणी गरम करण्यामागचं प्रयोजन काय आहे ? नव्या जीवाची उत्पत्ती पाण्यात होऊ नये. त्या पाण्यात जी पाण्याच्या जीवांना उत्पन्न करण्याची शक्ती आहे, जी पौदगलिक शक्ती आहे. त्या संपंदेचा जो साचा आहे, आकृतिबंध आहे त्या साच्यालाच तोडायचं आहे, मग पाणी जेव्हा गरम करतात तेव्हा पाण्यातील परमाणू-परमाणूमध्ये विखंडण सुरु होते. जस-जसे विखंडण सुरु होते तसेते पाण्याची जीव उत्पन्न करण्याची संभावनाच समाप्त होऊन जाते. याला शास्त्राच्या भाषेत म्हणतात की पाणी गरम करून योनीनिरुद्ध करतात. योनीनिरुद्धाचा अर्थ आहे की तिथे इतक्या वेळेपर्यंत जीवांची उत्पत्ती होणार नाही. त्याला सुध्दा वेळेचं बंधन असते. असं नाही की, एकदा गरम केलं की पुन्हा जीव उत्पन्नच होत नाही.

वस्तुची प्रॉपर्टी, परमाणु बदलण्यात वातावरण

काम करतं. तुम्ही त्या पाण्याला बाटलीत बंद ठेवा की हवाबंद बाटलीत ठेवा, परंतु वातावरण त्याच्यावर परिणाम करणारच. वातावरण बंद करू शकत नाही. वायुसुरक्षित करू शकता, परंतु वातावरण प्रुफ करू शकत नाही. बिसलरी वॉटरमध्ये कधी जीव निघाले असं पेपरात वाचलं असेल. कारण पाणी भरलं तेव्हा जीव नव्हते, परंतु वेळ जसजसा वाढत जातो, वातावरण बदलतं, पाण्याचं स्वरूप बदलत जातं आणि त्यात जीवांची उत्पत्ती सुरु होते असे ते गणित आहे. म्हणून एकदा जैन विज्ञान वाचा, अगदी सखोल विज्ञान आहे त्यात.

#### १) पुदगल

भगवंतानी पदार्थला पाच प्रकारात विभाजित केले. एखादा पदार्थ, ज्यात गंध, रस, स्पर्श, वर्ण, आकृति आहे त्याला पुदगल म्हणतात. हे दृश्यमान जगत पुदगलच आहे मन काय आहे पुदगल आहे. शब्द काय आहे ? पुदगल आहे. आपण जे खातो, पीतो, ऐकतो सगळं काही पुदगल आहे. शब्दात काय आहे ? शब्दात सुध्दा रस, गंध, वर्ण, स्पर्श आहेत. जे अक्षर बोलले जात आहे त्यात वर्ण, रस आहे म्हणूनच त्याला पकडता येत आहे. याला रेकॉर्ड करता येतं, याच्यात जर आकार नसला तर रेकॉर्ड करता आलं असतं का ? निराकाराला रेकॉर्ड करता येतं का ? शब्दात वर्ण, स्पर्श, गंध, रस आहे मग आपल्याला त्याची अनुभूती का होत नाही ? अनुभूती यासाठी होत नाही जसे आता आपण या फरशीवर बसले आहात. त्यात सुध्दा रस आहे, पण तो रस कसा आहे ? अगदी सुप्र अवस्थेत उत्कट नाही. उत्कट जे असतं ते उत्कृष्ट असतं आणि त्याची अनुभूती होते, जे प्रकट होत नाही त्याची अनुभूती होत नाही. आता बघा आपण इथे सगळे बसलो आहोत, आपल्या सर्वांच्या अंतरंगात क्रोध आहे की नाही ? मग त्याची अनुभूती का होत नाही ? कारण आता तो सुप्र अवस्थेत आहे. ज्यावेळी कोणी क्रोध करीत असतो त्यावेळी त्याच्या अंतरंगात प्रेमाचा वास असतो की नाही ? परंतु क्रोध आला

आहे. प्रेम त्याच्याखाली दबले गेले आहे, तसेच हे शब्दाचे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आहेत. जे प्रकट होतात ते दिसतात, जे प्रकट होत नाही ज्याची अनुभूती होत नाही ते सुध्दा एक प्रकारचे पुद्गलच आहेत.

## २) धर्मास्तिकाय

दुसरा पदार्थ आहे धर्मास्तिकाय. ज्याला सायन्समध्ये ईथर म्हणतात. आपण जे गतिशील आहेत त्याचे माध्यम काय आहे ? माझे शब्द तुमच्यापर्यंत पोहचत आहेत. शब्द तर खूप मोठी गोष्ट आहे. पण माझी नजरसुध्दा तुमच्यापर्यंत पोहचत आहे आणि तुमची नजर माझ्यापर्यंत पोहचत आहे. माझे विचार तुमच्यापर्यंत पोहचत आहेत आणि तुमच्या मनातील विचार माझ्यापर्यंत पोहचत आहेत. हे कोणत्या माध्यमाने शक्य होते ? हे ज्या माध्यमातून घडते त्याला धर्मास्तिकाय म्हणतात. हा जो सूर्यप्रकाश जमीनीवर येत आहे; ही जी range तरंग आहे ज्या माध्यमातून आपल्यापर्यंत पोहचते ज्या मागाने येते त्याला धर्मास्तिकाय म्हणतात. भगवती सूत्रात अगदी सोप्या भाषेत सगळे वर्णन दिले आहे.

## ३) अधर्मास्तिकाय

तिसरा पदार्थ आहे अधर्मास्तिकाय. तुम्ही बसला आहात. चालायला रस्ता लागतो आणि बसायला आधार लागतो. चालायला रस्त्याची गरज आहे आणि बसायला स्टॅण्डची गरज असते. असेच आपणही थांबतो. डोळेपण स्थिर होतात. चिंतन पण थांबतं. जेंब्हा-जेंब्हा थांबणे होतं. त्याच्यासाठी exitation stand अस्तित्वाच्या आधाराची गरज असते. जे सायन्सचे विद्यार्थी आहेत त्यांना माहीत आहे दोन प्रकारचे reason असते. दोन कारणे असतात. एक अँकटीव रिझन असते, एक existence रिझन जसे पाणी बनण्याची प्रक्रिया काय आहे ? H<sub>2</sub>O म्हणजेच पाणी हायड्रोजन व ऑक्सीजन मुळे बनते. पण हायड्रोजन व ऑक्सीजन एकत्र करा तर पाणी तयार होत नाही. जो पर्यंत त्या दोघांमध्ये विद्युततरंग नसेल पाणी तयार होत नाही. ती विद्युततरंग

काय आहे फक्त existance अँकटीव नाही केवळ अस्तित्व. महत्त्वाचे एवढेच की थांबण्यासाठी अधर्मास्तिकाय, गति करण्यासाठी धर्मास्तिकाय.

## ४) आकाश तत्व

चौथा पदार्थ भगवंतांनी प्ररुपीत केला आहे आकाश तत्व, sky, space अधर्मास्तिकाय मध्ये वर्ण, रस, गंध, स्पर्श नाहीत. आकाश तत्त्वात सुध्दा वर्ण, रस, गंध, स्पर्श नाहीत. मग आकाश निळं कसं काय दिसते ? जी प्रकाशाची तरंग असते ती लांब, त्याची लांबी जास्त असेल तसा त्याचा रंग असतो. आखूड, short तरंग असेल तर लाल रंग असतो, दीर्घ तरंग असेल तर नीळा रंग असतो तो हे प्रकाशाचं गणित असतं. प्रकाशाची निळी तरंग असल्यामुळे आकाश निळ दिसतं त्यात वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नाहीत. केवळ अवकाश आहे, शून्य आहे, पोकळी आहे ज्यात सर्व सामावून जातात.

## ५) काळ

पाचवा पदार्थ आहे काळ, वेळ. घड्याळाची वेळ किंवा कॅलेंडरमधील वेळ अथवा पंचागातील वेळ; मुहूर्त नाही, वेळ ऑँजेकटीव आहे, सज्जेकटीव नाही. कर्ता कोण आहे ? चैतन्य शक्ती. कर्ता वेळेला नका बनवू, वेळेचा उपयोग करता येतो. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय. काळ आणि पुद्गल. यामध्ये वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, आकृति हे पाचहि ज्यात आहेत ते पुद्गल आहेत सर्व पुद्गल एकसारखे असतात. सोनं ही पुद्गल, चांदीही पुद्गल, हिराही पुद्गल, कोळसासुध्दा पुद्गल. मग अंतर कशात आहे ? केवळ त्यांच्या संरचनेत अंतर आहे. एकात अणूंचे गठन अशा पद्धतीने झाले की सोने तयार झाले, दुसऱ्यात अणूंचे गठन वेगळ्या पद्धतीने झाले तर ते चांदी बनले. हे काय आहे केवळ वेगवेगळी संरचना. परमाणुंची जी श्रृंखला आहे तिला जर बदलून टाकले तर वस्तुचे स्वरूप बदलून जाते; त्याची प्रकृति बदलून जाते. लोखंडाला जर पान्याचा स्पर्श केला तर त्याचे स्वरूप बदलते जर वर्ण, गंध, रस, स्पर्श

बदलायचं असेल तर काय बदलावं लागेल ? त्याचा साचा, त्याची प्रकृती बदलावी लागेल. आपलं मन तरी काय आहे ? भाषा काय आहे ? आपले विचार काय आहेत ? हे कशामुळे बनतात ? कोणत्या माध्यमाने तयार होतात. यांच्यात सुधा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आहे त्याला बदलायचं म्हणजे आधी साचा बदलून टाकायचा.

### ध्यानाचे विज्ञान

कार्मण शरीरचा, तेजस शरीराचा साचा बदलण्याच्या प्रक्रियेलाच ध्यान म्हणतात. जसे आपण स्वस्तिकचे ध्यान केले तर काय वाटते ? आणि तुम्ही जर अमिताभ बच्चनचे ध्यान केले तर त्याचे रूप, त्याची अँक्षन, त्याचे भाव, त्याचे डायलॉग याचे ध्यान होते. मग बघा तुमचा चेहरा, तुमचे भाव, तुमची अँक्षन, तुमचा आवाज कसा होतो ? थोडासा परिणाम होतोच ना ? मग आता सांगा. तुम्ही अमिताभ बच्चनच्या आकृतीचे ध्यान केले की प्रकृतीचे ध्यान केले. त्याच्या आकृतीचे ध्यान केले की चलचित्राचे ध्यान केले ? ज्या आकाराचे ध्यान कराल तसा प्रकार अंतरंगात सुरु होतो. मग ‘स्वस्तिक’ च्या आकाराचे ध्यान केलं तर अंतरंगात काय सुरु होईल ? समवशरणाचे ध्यान केले मनात काय सुरु होईल ? भगवंताचे ध्यान केले तर आतमध्ये तरंग कोणते येतील ? भूताचे ध्यान केले तर भीतीच्या लहरी येण्यास सुरुवात होईल. म्हणून उत्तराध्ययन सूत्राचे पारायण करताना आपण समवशरणाचे ध्यान करतो. जेणे करून ते पवित्र व्हायब्रेशन, त्या पावन लहरी, ते परमाणू येतात आणि आपल्या अंतरंगातील अशुभ-शुभ व्हायला सुरुवात होते. त्याचे सगळे स्वरूप बदलून जाते म्हणून भगवंतानी आधी अजीव तत्त्वाचे प्रबोधन दिले.

फक्त लक्षात ठेवा. अजीवला अजीवच समजा, जीवाला जीवच समजा जेव्हा अजीवला जीव व जीवला अजीव समजण्याची चूक होते तेव्हा मिथ्यात्व, विपरीत बुधी होते. सत्य म्हणजे जे जसे

आहे त्याला तसेच समजा. लक्षात घ्या जडाला चेतन समजले तर मिथ्यात्वी होणार. जसे विद्युत तरंग काय आहे ? त्याच्यात जीव आहे का ? कारण जीव जो असतो त्याला चार पर्यासी पाहिजे. जीवाला वास करण्यासाठी आहार, शरीर, इंद्रिय आणि श्वासोश्वास असणे आवश्यक आहे. जीव आणि अजीव, जड आणि चेतन यांची ओळख शास्त्रात एवढीच सांगीतलेली आहे. सायन्समध्येही हे सांगितलं आहे. जो श्वास घेतो तो सजीव. जो श्वास घेत नाही तो अजीव, निर्जीव. तुमच्या समोर एक छोटसं उदाहरण ठेवतो.

तुम्ही मेणबत्ती लावता, ती जर तुम्ही पेटवली आणि एका बाटलीत बंद करून ठेवून, त्यावर झाकण ठेवून दिले आतमध्ये हवा जाणार नाही मग ती मेणबत्ती किती वेळ जळत राहते ? जोपर्यंत आतमध्ये ऑक्सीजन आहे तोपर्यंत जळते. ऑक्सीजन संपला की मेणबत्ती विझून जाते आता दुसरी गोष्ट पहा तुमच्याकडे बॅटरीचा सेल आहे. तो कुठपर्यंत चालतो ? जोपर्यंत तो भिजत नाही. हवा त्यात जात नाही हवा आत गेली की हवेच्या स्पर्शाने तो कामातून जातो. म्हणून स्पष्ट होते की त्यात जीव नाही. सेलचे घड्याळ सजीव नाही. ही फक्त परंपरा, रुढी आहे. लाईट अचित आहे. फक्त लाईटमुळे जीव-जुतूंची उत्पत्ती होते म्हणून लावण्यास आम्हांला मनाई आहे. पाल जीव खाते, हिंसा होते.

तर असे पाच प्रकारचे अजीव आहेत. ह्या पाचही अजीव तत्त्वापासून जो मुक्त होतो तो सिध्द होतो भगवंत होतो. जैन धर्म एकटा असा धर्म आहे, जो सांगतो सिध्द होण्यासाठी जरूरी नाही की तुम्ही भगवंताला मानाच. भगवंतांनी दिलेल्या व्यवस्थेचा स्विकार करा. शर्त केवळ परमात्मा बनण्याची एवढीच आहे. पदार्थापासून विभक्त व्हावे, विलग व्हावे. तुम्ही विश्वभरातील कोणतेही धर्मग्रंथ उद्घडून बघा. वर्णन येते की तुम्ही मला मानलं आणि माझां ऐकलं तर तुम्ही

मुक्त होऊ शकता. परंतु जैन धर्मात असे काही वर्णन नाही. तो जैन धर्माला मान्य करणारा असो अथवा नसो फक्त पदार्थापासून मुक्त व्हा. तुम्ही परमेश्वर बनाल. किती क्रांतीकारी गोष्ट. महावीरांनी सांगितली आहे. हा क्रांतीकारी सिध्दांत जर स्विकार केला तर संप्रदाय, जाती हा वादच समाप्त होऊन जाईल असा कोठेही उल्लेख नाही की मुखवस्त्रिका लावली तरच मुक्ती, लांब लावली, आखुड लावली तरच मुक्ती असा काही नियम नाही. भगवंताचा अगदी उदार दृष्टीकोण आहे. ते सांगतात ‘अन्यलिंग सिध्दा’ अर्थात जो दुसऱ्याच्या व्यवस्थे प्रमाणे जगेल. त्याला सुधा मोक्षप्राप्तीचा अधिकार आहे. कोणत्याही परंपरेचा अभिनिवेश नाही, परीथानाचा आग्रह नाही. म्हणूनच नवकार महामंत्रात कुठेही कुणाचा नामोल्लेख नाही, केवळ नमन केले आहे. कुण्या व्यक्तीला नमस्कार नाही, कोणत्या रूपाला नमस्कार नाही. कुठल्या आकृतीला नमस्कार नाही. नमन आहे केवळ शक्तीला, अस्तित्वाला, भावनेला. असा श्रेष्ठतम मंत्र आहे नवकार. अशी अनुत्तर, अद्वितीय वाणी भगवंतांची.

बंधुनो ! पदार्थापासून मुक्त व्हा. परमात्मा बनल्याशिवाय राहणार नाही. किती प्रकाराने सिध्द होऊ शकता ? स्त्री शरीराने सुधा सिध्दत्व मिळू शकते, पुरुषाच्या शरीराने, नपुंसक शरीरानेसुधा सिध्द होता येते. अशी कोणतीही शर्त नाही की कोणते शरीर हवे, कोणती जात असावी. कोणते लिंग असेल तरच सिध्दत्व मिळेल, अशी कोणतीच अट नाही. कोणत्याही देशात जन्म झालेला असो, जमीनीवर तरीसुधा मोक्ष प्राप्त होऊ शकतो! पाण्यात आहे, आकाशात आहे तरीपण मुक्ती संभव आहे. न स्थानाची मर्यादा, न क्षेत्राची मर्यादा न शरीराची मर्यादा बिनाशर्त मुक्त आहे. कुठंही आणि कोणीही सिध्दत्व प्राप्त करू शकतात. बुटका पण आणि उंच पण मुक्त होतो. बसल्या-बसल्या सिध्द होता येतं, झोपल्या

झोपल्यासुधा मुक्त होता येतं. अशी सुंदर आराधना या श्रीमद् उत्तराध्ययनात आहे. जी प्रभू महावीरांची अंतीम वाणी आहे. या शेवटच्या शब्दानंतर जगाला पुन्हा एक शब्दही त्यांचा लाभला नाही.

### जीवतत्त्वाची यात्रा

आतापर्यंत आपण जे वाचलं, ज्याची आराधना केली त्याच्यात जगातील जड पदार्थाबरोबरील संबंधाची यात्रा केली. ती यात्रा करताना जे जड पदार्थापासून विभक्त झाले ते कसे मुक्त होतात आणि सिध्द परमात्मा कुठे निवास करतात हे बघितलं. आता या सिध्दत्वाला प्राप्त करण्यासाठी जी यात्रा करतो ती कोण-कोणत्या शरीरात राहून, कोणत्या गतीत राहून, कोणत्या भावनेत राहून केली. त्या जीवतत्त्वाची यात्रा करू या. मी कशाप्रकाराचा त्रास सहन केला ? काय-काय कष्ट काढले ? कसा क्रोध केला, काय पापं केली या सर्व गोष्टींचे पर्यालोचन, अवलोकन आणि आलोचना करायची आहे. या सर्व गोष्टींचे अवलोकन प्रभु महावीरांच्या दिव्य ज्ञानात आपण सर्व करीत आहोत. आपण आपल्या अनादिकाळातील पाप यात्रा, त्या सर्व अशुभ यात्रेला विसर्जित करू या.

### १) पृथ्वीकाय

पृथ्वीकाय म्हणजे माती. ३६ प्रकार स्थुल मातीचे प्रकार आहेत. हिरापण मातीचं आहे, सोनं ही मातीच आहे हे जितके मणिरत्न आहेत सगळे पृथ्वीकाय. तेच निर्माण झाले आहेत. जेवढे धातू आहेत ते सुधा पृथ्वीकायच आहेत. या पृथ्वी शरीरात आपण कितीवेळा वास करू आलो. पृथ्वीकायेतील जीवांना चेतना असते. एका मातीच्या ढेकळात पृथ्वीकायचे एवढे जीव असतात की तिथे रहाता-रहाता कुणीकडे जन्म होतो कुणीकडे मरण येते ह्याचा बोधसुधा होत नाही. इतकी गहन वेदना असते पण त्याचा बोध नसतो.

बंधुनो ! आपण भगवंताच्या चरणी एक भावना करू या की पुन्हा पृथ्वीकाय मध्ये जन्म नको. शास्त्रात

विधान येतं की, नारकीय जीव पृथ्वीकायमध्ये जन्म घेऊ शकत नाही. परंतु देवलोकाचा जीव देवाच्या योनीत राहुन सुधा देव आयुष्य पूर्ण करून पृथ्वी, माती बनून जातात आणि तेथील एकच पाप, ज्या पापाच्या कारणाने ते माती बनण्यास मजबूर बनून जातात. त्या पापाचे नाव आहे लोभ. त्या लोभाच्या घनीभुत चेतनेमुळे त्या लोभामुळे असे आयुष्याचे बंध पडतात की देवलोकात गेलेला जीवात्मा तेथून सरळ मातीच बनतो. आता तरी प्रार्थना करूया की, भगवंता आता पुन्हा मला पृथ्वीकायेत जन्म नको. पृथ्वीकायेतील जीवांवर दया करु या. संपूर्ण विवेक ठेऊन वागु या. आता करु या पाण्याची चर्चा.

## २) पाणी

पाणी शुद्धदृपाने पाच प्रकारचे आहे. पृथ्वीकायचे जरी स्थुल प्रकार ३६ सांगितले आहे, परंतु पृथ्वीकायच्या सुधा ७ लाख योनि आहेत. पाणीच्या जीवाची ही ७ लाख योनि आहेत. स्थुल पाणी म्हणजे जे डोळ्यांनी दिसते तसे पाच प्रकारचे पाणी आहेत. सूक्ष्म पाण्याचे स्वरूप चौदा राजु लोकमध्ये व्याप्त आहे. असे कोणतेही स्थान नाही, जिथे पृथ्वीकायेचे सूक्ष्म जीव नसतील. बादर आणि सूक्ष्म जीवांत काय अंतर आहे ? सूक्ष्म जीव म्हणजे सूक्ष्मदर्शिकेत दिसतात असं नाही. भगवंत त्याला सूक्ष्म म्हणतात. ज्याला चिरता येत नाही, छेदन-भेदन करता येत नाही, जाळता येत नाही. जे कुणाला त्रास देत नाही. आणि स्वतः ही कुणाकडून त्रास करून घेत नाही. त्याला सूक्ष्म जीव म्हणतात. असे पृथ्वीकायचे सूक्ष्म जीव चौदा राजुलोकांत सामावलेले आहे. पाण्यातील सूक्ष्म जीवही असे संपूर्ण व्याप्त आहे. आता वनस्पतीचा विषय प्रारंभ करु या.

## ३) वनस्पतीकाय

पाणी कसे व किती वापरायचे आहे त्याची सुधा एक पद्धत आहे. वनस्पतीचा सुधा उपयोग करण्याची रीत आहे. आयुर्वेद मध्ये त्याचं खुपच सुंदर वर्णन येतं.

वैद्याला कोणत्या वनस्पतीचा औषधासाठी उपयोग करायचा असेल तर वैद्य पहिल्या दिवशी त्या वृक्षाकडे जातात. त्याच्याबरोबर आत्मीय संबंध स्थापीत करत असतात. त्याला नमन करीत त्याला आदर देऊन आज्ञा घेत असत की उद्या मी अमुक उपचारासाठी तुझ्या या अवयवाला घेण्यासाठी येईन. मुळाची गरज असेल तर त्याच्यासाठी, पानाची गरज असेल तर पानाची त्याची फुलं उपयोगात घ्यायचं असेल तर त्याची आज्ञा घ्यायचे, निवेदन करीत की मी उद्या घेण्यासाठी येणार आहे. उखडायला, तोडायला, खुडायला नाही; घेऊन जायला येणार आहे. तू तयार रहा. अशाप्रकारे त्या रोपाबद्दल आत्मीय सौहार्दाचे संबंध बनवुन निवेदन करून त्याला ग्रहण केले जात असे.

असाच दृष्टीकोन अशीच विधी घर बनवताना कुदळ मारताना करावयास हवी, अगदी सरळ विधी आहे की जेव्हा कुदळ मारणार आहात ते सुरु करताना, प्रारंभ करण्यापूर्वीच तेथील पृथ्वीकायच्या सान्या जीवांशी मैत्रीचे संबंध स्थापित करा. निवेदन करा की आमची या जागेवर राहण्यासाठी घर बांधण्याची इच्छा आहे. त्यासाठी तुमचा उपयोग करावा लागेल तेव्हा तुम्हाला कोणत्याही प्रकारे वेदना, त्रास होऊ नये यासाठी तुम्ही तत्पर रहावे. पाणी वापरताना पाण्याची मर्यादा करावी. पाणी वापरताना पाण्याच्या जीवांना विनंती करावी की, मी तुमचा वापर करणार आहे त्याचं निवेदन करीत आहे. निवेदन केलं तर वेदना कमी होते. विचारून घ्या म्हणजे मैत्रीभाव निर्माण होतो.

## ४) वायुकाय

वायुकायची विधी खुप सखोल सांगितली आहे. मी दिवसभर श्वासोश्वास करताना इतक्या वायुकाय जीवांची स्विकृती मागत आहे. या सर्व विधी मागील हेतु एकच आहे की सर्व जीवसृष्टी बद्दल करूणापूर्ण संबंध स्थापित व्हावे. प्रेमपूर्ण भावनेने सहकार्य मागाल

तर देतांना त्यांना त्रास होणार नाही. असेच वनस्पतीकाय बद्दल उठल्याबरोबर संकल्प करावा की इतक्या प्रकारच्या भाज्या, धान्य मी ग्रहण करेन. तुमची अनुज्ञा मागत आहे. आज्ञा घेऊन कराल तर आराधनेचे भाव असतात. बिना आज्ञेचे घ्याल तर विराधनेचे भाव येतील. अंतर काय आहे ? स्नेहाने वागाल तर संबंध बनतील. देवाने वागाल तर केवळ वैरबंध होतील.

#### ५) तिर्यच

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वाऊकाय, वनस्पतीकाय, बेंन्द्रीय, तेंन्द्रीय, चउरेन्द्रीय यांच्याविषयी २ प्रकारच्या आयुष्याचे वर्णन येते. एक आयुष्य आणि एक कायेचे आयुष्य. मनुष्यांचं कसं आहे ? त्याच्या कायेचे जेवढे आयुष्य असेल तेवढेच आयुष्य असते. येथे मरण प्राप्त झाले तर पुन्हा या शरीरात उत्पत्ती नाही. पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वाऊकाय, बेंन्द्रीय, तेंन्द्रीय, चऊरेन्द्रीयाचे जीव ज्या शरीरात मरण पावतात. पुन्हा त्याच शरीरात जन्म घेतात. त्याच आधारावर बेंन्द्रीयाची उत्कृष्ट स्थिती बारा वर्ण, कमीत कमी अंतमुहूर्तपर्यंत. परंतु त्याच्याबरोबर एक सूत्र दिलं आहे की त्याच ‘आळी’तील जीव पुन्हा त्याच शरीरात होऊ शकतो आणि त्या शरीरात तो संख्यात काळ सुध्दा त्या शरीराला न सोडता राहू शकतो. म्हणजे लक्षात येत नाही आपल्याला की आयुष्य त्याचं कधी पूर्ण झालं आणि कोणता जन्म चालू आहे. त्याच स्वरूपात त्याचं पडद्यावर पुन्हा नवीन नाटक चालू होतं. ही कायस्थिती

केवळ तिर्यच जीवांविषयी आहे. देव नारकीय आणि मनुष्य यांची भवस्थिती आणि कायस्थिती दोन्ही एकसमान आहे.

तेइन्द्रीयचं आयुष्य आहे ४९ दिवस-रात्र. परंतु पुन्हा त्याच शरीरात जन्म घेतला तर नवीन जीवन सुरु होतो.

लोक अडीच द्वीपात आहे. असे खुप विस्तारपूर्ण प्रतिपादन आहे त्यानंतर देवलोकाचे वर्णन आहे. सगळे देव वरती राहत नाही. भवनपती देव जमीनीखाली राहतात, भवनात राहतात. वाणव्यंतर देव जमीनीवर राहतात. आपले आत्मबळ मजबूत असेल तर हे देव आपल्याला कोणताही उपद्रव करू शकत नाही. छत्तीसाव्या अध्यायाचा अंतिम पडाव, अंतीम वरदान संलेखनेचे आहे आणि या शिखर वरदाना बरोबर एक महत्वपूर्ण शिकवण आहे कंदर्पभावना, राक्षसी भावना, शैलेशी भावना, अभियोग भावना या चार भावनांपासून व्यक्तीने दूर राहिले पाहिजे. दूसऱ्यांना विस्मयचकित करण्यासाठी, चमत्कार दाखविण्यासाठी काहीतरी करणे कंदर्पभावना आहे. अभियोग भावना आहे. धर्म, धर्मसंघ, धर्मगुरुंचा अनादर करणे, अपमान करणे, शैलेशी भावना आहे. आपसातले जे वैमनस्य आहे ते समाप्त न करता ते दीर्घकाळ टिकण्याचा दृश्यीकोन ही आसुरीय भावना आहे. जशी आपली भावना असते तसेच आपले भविष्य. भवितव्य बनते. म्हणून अशा अशुभ भावनांपासून दूर रहावे. भगवंताच्या शेवटच्या अध्यायातील वरदानाने अशुभ भावनांचा जीवनातून शेवट करावा... आणि मंगलमयी वरदान ग्रहण करून मंगलकारी-कल्याणकारी जीवन जगावे ही मंगल भावना.

(समाप्त) ●

**जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा  
सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...**

**जैद्र जागृति**